



Mrs.Prema Sharma

27 Sep 1973

06:55 PM

Nagpur

Model: All-Dosha-Report

Order No: 119294601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 27/09/1973
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 18:55:00 घंटे
इष्ट _____: 32:09:14 घटी
स्थान _____: Nagpur
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:13:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 18:41:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:08:54 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:06:33 घंटे
सूर्योदय _____: 06:03:18 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:04:58 घंटे
दिनमान _____: 12:01:40 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 10:47:50 कन्या
लग्न के अंश _____: 28:03:46 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: हस्त - 4
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: बालव
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ठ-ठुमकी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1895	आश्विन	5
पंजाबी	संवत : 2030	आश्विन	12
बंगाली	सन् : 1380	आश्विन	11
तमिल	संवत : 2030	पुरुटासी	12
केरल	कोल्लम : 1149	कन्नी	11
नेपाली	संवत : 2030	आश्विन	12
चैत्रादि	संवत : 2030	आश्विन	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2030	आश्विन	शुक्ल 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
 तिथि समाप्ति काल _____ : 18:36:28
 जन्म तिथि _____ : 2
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : हस्त
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:36:10 घंटे
 जन्म योग _____ : हस्त
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
 योग समाप्ति काल _____ : 18:12:35 घंटे
 जन्म योग _____ : ऐन्द्र
 सूर्योदय कालीन करण _____ : किंस्तुघ्न
 करण समाप्ति काल _____ : 06:56:05 घंटे
 जन्म करण _____ : बालव
 भयात _____ : 58:04:09
 भभोग _____ : 59:47:05
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 0 वर्ष 3 मा 12 दि

घात चक्र

मास _____ : भाद्रपद
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : श्रवण
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : कौलव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मेष
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : मेष
 चन्द्र _____ : वृश्चिक
 मंगल _____ : वृष
 बुध _____ : मीन
 गुरु _____ : मिथुन
 शुक्र _____ : कर्क
 शनि _____ : मीन
 राहु _____ : सिंह

PT. AMITABH SHARMA

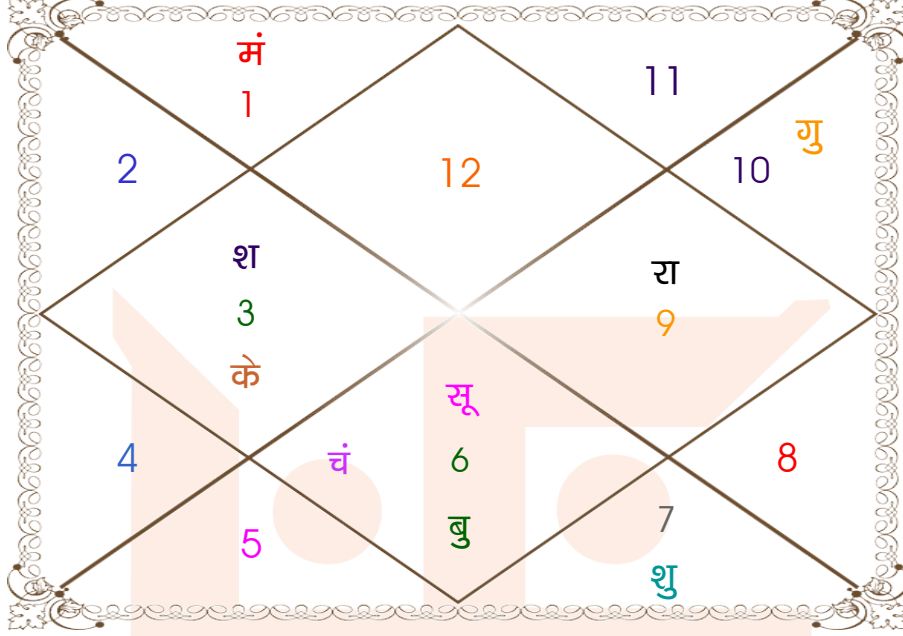
SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

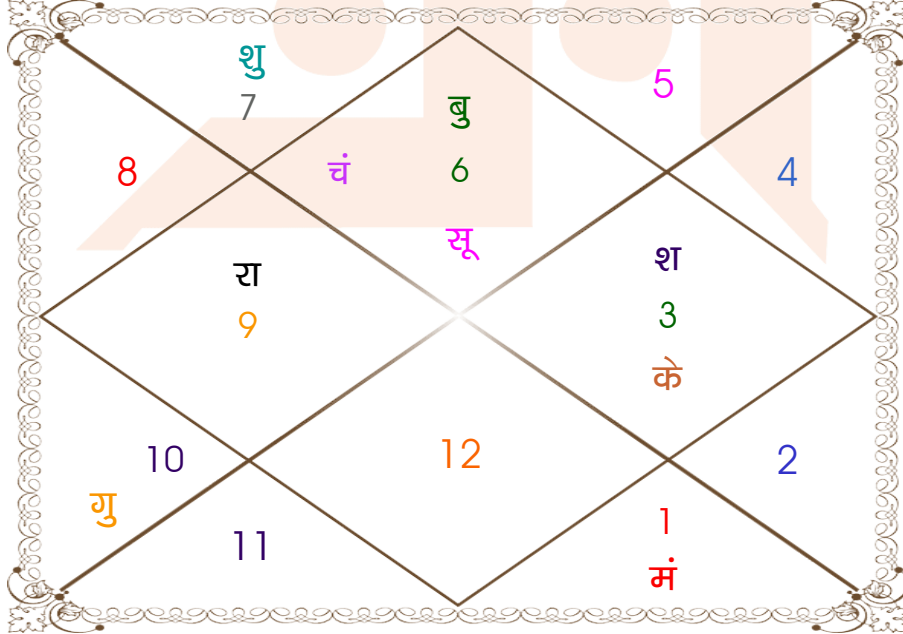
ammupatni66@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

ल	मं		श के
गु			
रा		शु	बु सू चं

लग्न कुंडली

के श	मं	ल
		गु
बु सू चं	शु	रा

विंशोत्तरी
चन्द्र 0वर्ष 3मा 12दि
चन्द्र

27/09/1973

09/01/2084

चन्द्र	09/01/1974
मंगल	09/01/1981
राहु	09/01/1999
गुरु	09/01/2015
शनि	09/01/2034
बुध	09/01/2051
केतु	09/01/2058
शुक्र	09/01/2078
सूर्य	09/01/2084

योगिनी
संकटा 0वर्ष 2मा 22दि
उल्का

19/12/2024

19/12/2030

उल्का	19/12/2025
सिद्धा	18/02/2027
संकटा	19/06/2028
मंगला	19/08/2028
पिंगला	19/12/2028
धान्या	20/06/2029
भ्रामरी	18/02/2030
भद्रिका	19/12/2030

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

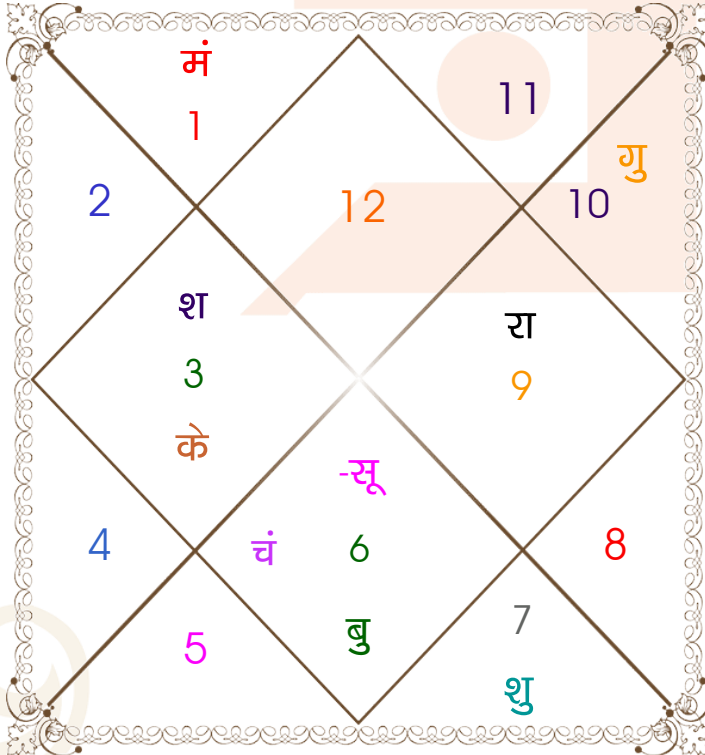
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	28:03:46	457:03:21	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	---
सूर्य			कन्या	10:47:50	00:58:54	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	सम राशि
चंद्र			कन्या	22:57:18	13:14:15	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि
मंगल	व		मेष	15:20:40	00:06:48	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
बुध			कन्या	28:49:26	01:29:45	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	स्वराशि
गुरु	व		मक	08:47:46	00:00:12	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	नीच राशि
शुक्र			तुला	23:00:42	01:09:18	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	स्वराशि
शनि			मिथु	10:54:11	00:02:09	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	मित्र राशि
राहु	व		धनु	09:26:19	00:12:27	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	नीच राशि
केतु	व		मिथु	09:26:19	00:12:27	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	नीच राशि
हर्ष			कन्या	28:43:54	00:03:39	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	---
नेप			वृश्चि	11:38:27	00:01:18	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	---
प्लूटो			कन्या	10:47:27	00:02:18	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	---
दशम भाव			धनु	21:50:29	--	पूर्वाषाढ़ा	--	20	गुरु	शुक्र	गुरु	--

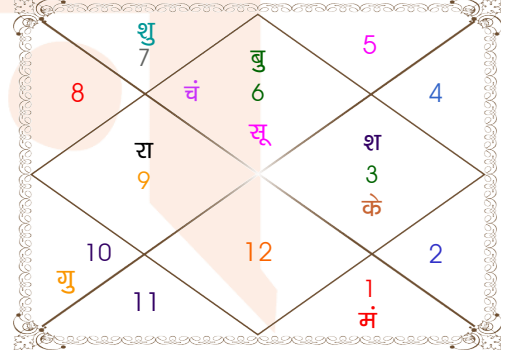
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:29:42

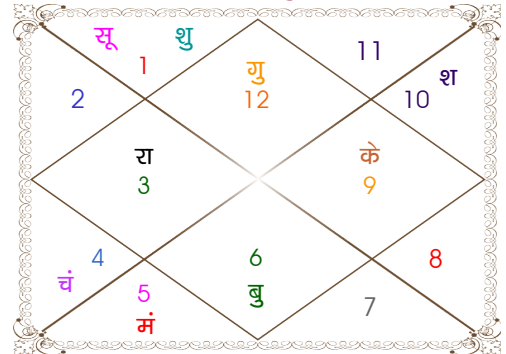
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 12:01:33	मीन 28:03:46
2	मेष 12:01:33	मेष 25:59:20
3	वृष 09:57:07	वृष 23:54:55
4	मिथुन 07:52:42	मिथुन 21:50:29
5	कर्क 07:52:42	कर्क 23:54:55
6	सिंह 09:57:07	सिंह 25:59:20
7	कन्या 12:01:33	कन्या 28:03:46
8	तुला 12:01:33	तुला 25:59:20
9	वृश्चिक 09:57:07	वृश्चिक 23:54:55
10	धनु 07:52:42	धनु 21:50:29
11	मकर 07:52:42	मकर 23:54:55
12	कुम्भ 09:57:07	कुम्भ 25:59:20

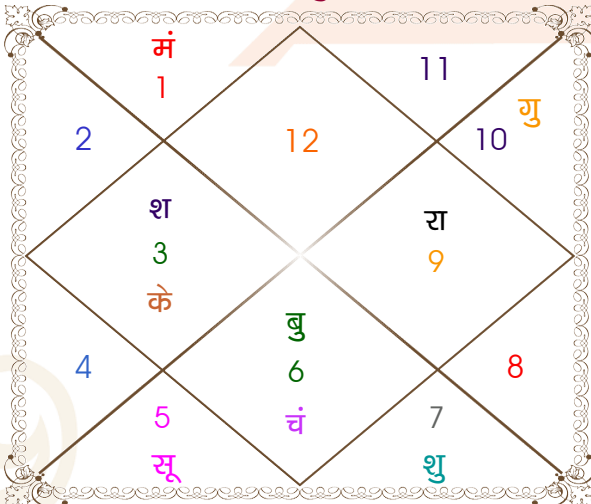
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	28:03:46
2	वृष	00:34:18
3	वृष	27:08:37
4	मिथुन	21:50:29
5	कर्क	18:23:08
6	सिंह	20:12:08
7	कन्या	28:03:46
8	वृश्चिक	00:34:18
9	वृश्चिक	27:08:37
10	धनु	21:50:29
11	मकर	18:23:08
12	कुम्भ	20:12:08

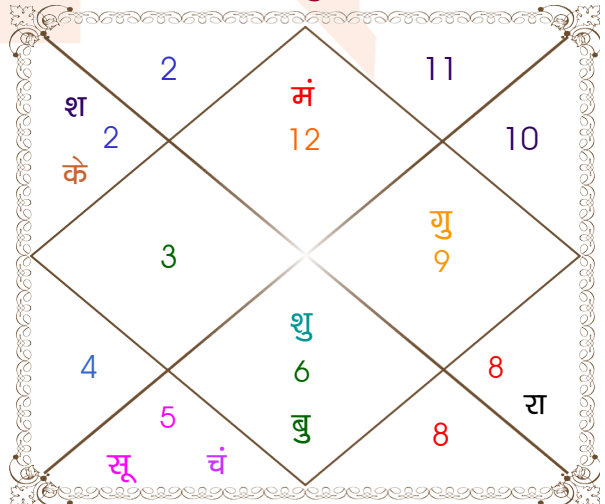
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

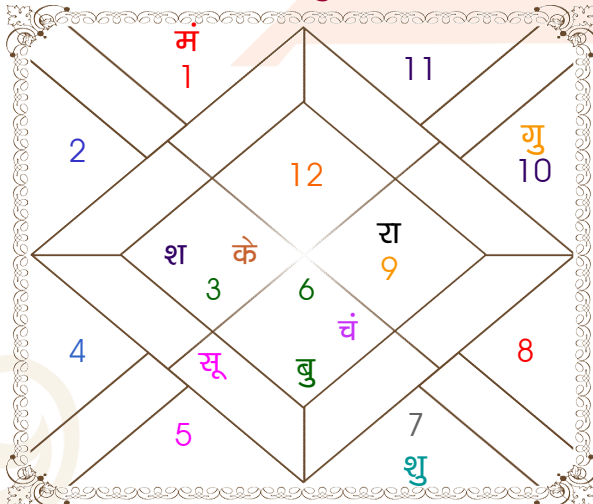
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	वृद्ध	शान्त	शयन	0.81	18 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	कुमार	मुदित	कौतुक	2.00	64 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	नेत्रपाणि	4.28	55 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	स्वस्थ	भोजन	6.92	77 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	भीत	निद्रा	0.07	63 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	वृद्ध	स्वस्थ	भोजन	1.73	17 %
शनि	पुत्र	आयु	कुमार	मुदित	भोजन	1.89	55 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	भीत	भोजन	0.00	88 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	भीत	नेत्रपाणि	0.00	88 %
कुल						17.71	

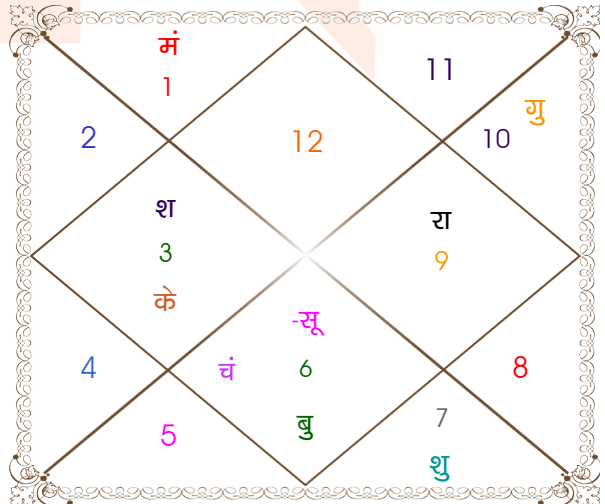
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 0 वर्ष 3 मास 12 दिन

चंद्र 10 वर्ष 27/09/1973 09/01/1974	मंगल 7 वर्ष 09/01/1974 09/01/1981	राहु 18 वर्ष 09/01/1981 09/01/1999	गुरु 16 वर्ष 09/01/1999 09/01/2015	शनि 19 वर्ष 09/01/2015 09/01/2034
00/00/0000	मंगल 07/06/1974	राहु 22/09/1983	गुरु 26/02/2001	शनि 12/01/2018
00/00/0000	राहु 26/06/1975	गुरु 14/02/1986	शनि 10/09/2003	बुध 21/09/2020
00/00/0000	गुरु 31/05/1976	शनि 21/12/1988	बुध 16/12/2005	केतु 31/10/2021
00/00/0000	शनि 10/07/1977	बुध 11/07/1991	केतु 21/11/2006	शुक्र 31/12/2024
00/00/0000	बुध 08/07/1978	केतु 28/07/1992	शुक्र 22/07/2009	सूर्य 13/12/2025
00/00/0000	केतु 04/12/1978	शुक्र 29/07/1995	सूर्य 11/05/2010	चंद्र 14/07/2027
00/00/0000	शुक्र 03/02/1980	सूर्य 22/06/1996	चंद्र 10/09/2011	मंगल 22/08/2028
27/09/1973	सूर्य 10/06/1980	चंद्र 22/12/1997	मंगल 16/08/2012	राहु 29/06/2031
सूर्य 09/01/1974	चंद्र 09/01/1981	मंगल 09/01/1999	राहु 09/01/2015	गुरु 09/01/2034
बुध 17 वर्ष 09/01/2034 09/01/2051	केतु 7 वर्ष 09/01/2051 09/01/2058	शुक्र 20 वर्ष 09/01/2058 09/01/2078	सूर्य 6 वर्ष 09/01/2078 09/01/2084	चंद्र 10 वर्ष 09/01/2084 27/09/2093
बुध 07/06/2036	केतु 07/06/2051	शुक्र 10/05/2061	सूर्य 29/04/2078	चंद्र 09/11/2084
केतु 04/06/2037	शुक्र 06/08/2052	सूर्य 11/05/2062	चंद्र 28/10/2078	मंगल 10/06/2085
शुक्र 04/04/2040	सूर्य 12/12/2052	चंद्र 09/01/2064	मंगल 05/03/2079	राहु 10/12/2086
सूर्य 08/02/2041	चंद्र 13/07/2053	मंगल 11/03/2065	राहु 28/01/2080	गुरु 10/04/2088
चंद्र 11/07/2042	मंगल 09/12/2053	राहु 10/03/2068	गुरु 15/11/2080	शनि 09/11/2089
मंगल 08/07/2043	राहु 28/12/2054	गुरु 09/11/2070	शनि 28/10/2081	बुध 10/04/2091
राहु 24/01/2046	गुरु 04/12/2055	शनि 09/01/2074	बुध 03/09/2082	केतु 10/11/2091
गुरु 01/05/2048	शनि 12/01/2057	बुध 09/11/2076	केतु 09/01/2083	शुक्र 10/07/2093
शनि 09/01/2051	बुध 09/01/2058	केतु 09/01/2078	शुक्र 09/01/2084	सूर्य 27/09/2093

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 0 वर्ष 3 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य 31/12/2024 13/12/2025	शनि - चंद्र 13/12/2025 14/07/2027	शनि - मंगल 14/07/2027 22/08/2028	शनि - राहु 22/08/2028 29/06/2031	शनि - गुरु 29/06/2031 09/01/2034
सूर्य 17/01/2025 चंद्र 15/02/2025 मंगल 07/03/2025 राहु 28/04/2025 गुरु 13/06/2025 शनि 07/08/2025 बुध 25/09/2025 केतु 16/10/2025 शुक्र 13/12/2025	चंद्र 30/01/2026 मंगल 04/03/2026 राहु 30/05/2026 गुरु 15/08/2026 शनि 15/11/2026 बुध 05/02/2027 केतु 11/03/2027 शुक्र 15/06/2027 सूर्य 14/07/2027	मंगल 06/08/2027 राहु 06/10/2027 गुरु 29/11/2027 शनि 01/02/2028 बुध 30/03/2028 केतु 22/04/2028 शुक्र 29/06/2028 सूर्य 19/07/2028 चंद्र 22/08/2028	राहु 25/01/2029 गुरु 13/06/2029 शनि 24/11/2029 बुध 21/04/2030 केतु 21/06/2030 शुक्र 11/12/2030 सूर्य 01/02/2031 चंद्र 29/04/2031 मंगल 29/06/2031	गुरु 30/10/2031 शनि 25/03/2032 बुध 03/08/2032 केतु 26/09/2032 शुक्र 27/02/2033 सूर्य 14/04/2033 चंद्र 30/06/2033 मंगल 23/08/2033 राहु 09/01/2034
बुध - बुध 09/01/2034 07/06/2036	बुध - केतु 07/06/2036 04/06/2037	बुध - शुक्र 04/06/2037 04/04/2040	बुध - सूर्य 04/04/2040 08/02/2041	बुध - चंद्र 08/02/2041 11/07/2042
बुध 14/05/2034 केतु 04/07/2034 शुक्र 27/11/2034 सूर्य 10/01/2035 चंद्र 25/03/2035 मंगल 15/05/2035 राहु 24/09/2035 गुरु 19/01/2036 शनि 07/06/2036	केतु 28/06/2036 शुक्र 27/08/2036 सूर्य 14/09/2036 चंद्र 14/10/2036 मंगल 04/11/2036 राहु 29/12/2036 गुरु 15/02/2037 शनि 13/04/2037 बुध 04/06/2037	शुक्र 23/11/2037 सूर्य 14/01/2038 चंद्र 10/04/2038 मंगल 10/06/2038 राहु 12/11/2038 गुरु 30/03/2039 शनि 10/09/2039 बुध 03/02/2040 केतु 04/04/2040	सूर्य 19/04/2040 चंद्र 15/05/2040 मंगल 02/06/2040 राहु 19/07/2040 गुरु 29/08/2040 शनि 17/10/2040 बुध 30/11/2040 केतु 18/12/2040 शुक्र 08/02/2041	चंद्र 23/03/2041 मंगल 22/04/2041 राहु 09/07/2041 गुरु 16/09/2041 शनि 07/12/2041 बुध 18/02/2042 केतु 20/03/2042 शुक्र 15/06/2042 सूर्य 11/07/2042
बुध - मंगल 11/07/2042 08/07/2043	बुध - राहु 08/07/2043 24/01/2046	बुध - गुरु 24/01/2046 01/05/2048	बुध - शनि 01/05/2048 09/01/2051	केतु - केतु 09/01/2051 07/06/2051
मंगल 01/08/2042 राहु 24/09/2042 गुरु 11/11/2042 शनि 08/01/2043 बुध 28/02/2043 केतु 21/03/2043 शुक्र 20/05/2043 सूर्य 08/06/2043 चंद्र 08/07/2043	राहु 24/11/2043 गुरु 28/03/2044 शनि 22/08/2044 बुध 01/01/2045 केतु 24/02/2045 शुक्र 30/07/2045 सूर्य 14/09/2045 चंद्र 01/12/2045 मंगल 24/01/2046	गुरु 15/05/2046 शनि 23/09/2046 बुध 18/01/2047 केतु 07/03/2047 शुक्र 23/07/2047 सूर्य 03/09/2047 चंद्र 11/11/2047 मंगल 29/12/2047 राहु 01/05/2048	शनि 04/10/2048 बुध 20/02/2049 केतु 18/04/2049 शुक्र 29/09/2049 सूर्य 17/11/2049 चंद्र 07/02/2050 मंगल 06/04/2050 राहु 31/08/2050 गुरु 09/01/2051	केतु 18/01/2051 शुक्र 12/02/2051 सूर्य 19/02/2051 चंद्र 04/03/2051 मंगल 12/03/2051 राहु 04/04/2051 गुरु 24/04/2051 शनि 17/05/2051 बुध 07/06/2051

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र 07/06/2051 06/08/2052	केतु - सूर्य 06/08/2052 12/12/2052	केतु - चंद्र 12/12/2052 13/07/2053	केतु - मंगल 13/07/2053 09/12/2053	केतु - राहु 09/12/2053 28/12/2054
शुक्र 17/08/2051 सूर्य 08/09/2051 चंद्र 13/10/2051 मंगल 07/11/2051 राहु 10/01/2052 गुरु 07/03/2052 शनि 13/05/2052 बुध 13/07/2052 केतु 06/08/2052	सूर्य 13/08/2052 चंद्र 23/08/2052 मंगल 31/08/2052 राहु 19/09/2052 गुरु 06/10/2052 शनि 26/10/2052 बुध 14/11/2052 केतु 21/11/2052 शुक्र 12/12/2052	चंद्र 30/12/2052 मंगल 11/01/2053 राहु 12/02/2053 गुरु 13/03/2053 शनि 16/04/2053 बुध 16/05/2053 केतु 28/05/2053 शुक्र 03/07/2053 सूर्य 13/07/2053	मंगल 22/07/2053 राहु 13/08/2053 गुरु 02/09/2053 शनि 26/09/2053 बुध 17/10/2053 केतु 26/10/2053 शुक्र 20/11/2053 सूर्य 27/11/2053 चंद्र 09/12/2053	राहु 05/02/2054 गुरु 28/03/2054 शनि 28/05/2054 बुध 21/07/2054 केतु 13/08/2054 शुक्र 15/10/2054 सूर्य 04/11/2054 चंद्र 06/12/2054 मंगल 28/12/2054
केतु - गुरु 28/12/2054 04/12/2055	केतु - शनि 04/12/2055 12/01/2057	केतु - बुध 12/01/2057 09/01/2058	शुक्र - शुक्र 09/01/2058 10/05/2061	शुक्र - सूर्य 10/05/2061 11/05/2062
गुरु 11/02/2055 शनि 06/04/2055 बुध 25/05/2055 केतु 14/06/2055 शुक्र 09/08/2055 सूर्य 26/08/2055 चंद्र 24/09/2055 मंगल 14/10/2055 राहु 04/12/2055	शनि 06/02/2056 बुध 03/04/2056 केतु 27/04/2056 शुक्र 03/07/2056 सूर्य 24/07/2056 चंद्र 26/08/2056 मंगल 19/09/2056 राहु 19/11/2056 गुरु 12/01/2057	बुध 04/03/2057 केतु 25/03/2057 शुक्र 25/05/2057 सूर्य 12/06/2057 चंद्र 12/07/2057 मंगल 02/08/2057 राहु 25/09/2057 गुरु 13/11/2057 शनि 09/01/2058	शुक्र 31/07/2058 सूर्य 30/09/2058 चंद्र 09/01/2059 मंगल 21/03/2059 राहु 20/09/2059 गुरु 29/02/2060 शनि 09/09/2060 बुध 28/02/2061 केतु 10/05/2061	सूर्य 29/05/2061 चंद्र 28/06/2061 मंगल 19/07/2061 राहु 12/09/2061 गुरु 31/10/2061 शनि 28/12/2061 बुध 17/02/2062 केतु 11/03/2062 शुक्र 11/05/2062
शुक्र - चंद्र 11/05/2062 09/01/2064	शुक्र - मंगल 09/01/2064 11/03/2065	शुक्र - राहु 11/03/2065 10/03/2068	शुक्र - गुरु 10/03/2068 09/11/2070	शुक्र - शनि 09/11/2070 09/01/2074
चंद्र 30/06/2062 मंगल 05/08/2062 राहु 04/11/2062 गुरु 24/01/2063 शनि 01/05/2063 बुध 26/07/2063 केतु 31/08/2063 शुक्र 10/12/2063 सूर्य 09/01/2064	मंगल 03/02/2064 राहु 07/04/2064 गुरु 03/06/2064 शनि 09/08/2064 बुध 09/10/2064 केतु 03/11/2064 शुक्र 13/01/2065 सूर्य 03/02/2065 चंद्र 11/03/2065	राहु 22/08/2065 गुरु 15/01/2066 शनि 08/07/2066 बुध 10/12/2066 केतु 12/02/2067 शुक्र 13/08/2067 सूर्य 07/10/2067 चंद्र 06/01/2068 मंगल 10/03/2068	गुरु 18/07/2068 शनि 19/12/2068 बुध 06/05/2069 केतु 02/07/2069 शुक्र 12/12/2069 सूर्य 29/01/2070 चंद्र 20/04/2070 मंगल 16/06/2070 राहु 09/11/2070	शनि 11/05/2071 बुध 22/10/2071 केतु 29/12/2071 शुक्र 09/07/2072 सूर्य 04/09/2072 चंद्र 10/12/2072 मंगल 15/02/2073 राहु 08/08/2073 गुरु 09/01/2074

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 2
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

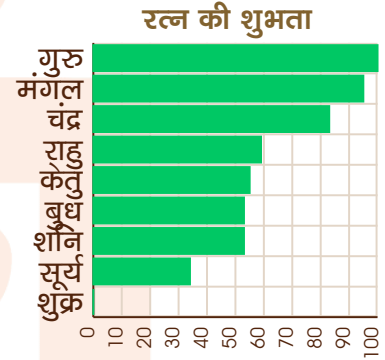
ammupatni66@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	95%	धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	83%	दम्पति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	59%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	55%	सुख, दम्पति
पन्ना	बुध	53%	दम्पति, सुख
नीलम	शनि	53%	सुख, धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	34%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	09/01/1974	47%	95%	95%	59%	100%	0%	53%	44%	34%
मंगल	09/01/1981	47%	89%	100%	31%	100%	0%	53%	44%	61%
राहु	09/01/1999	9%	70%	82%	53%	100%	0%	59%	72%	34%
गुरु	09/01/2015	47%	89%	100%	31%	100%	0%	53%	59%	55%
शनि	09/01/2034	9%	70%	82%	59%	100%	0%	66%	66%	34%
बुध	09/01/2051	47%	70%	95%	65%	100%	0%	53%	59%	55%
केतु	09/01/2058	9%	70%	100%	53%	100%	0%	31%	44%	67%
शुक्र	09/01/2078	9%	70%	95%	59%	100%	0%	59%	66%	61%
सूर्य	09/01/2084	55%	89%	100%	53%	100%	0%	31%	44%	34%

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/09/1977-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
सम
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

शत्रु से कष्ट
दम्पति
दुर्घटना से बचाव
व्यावसाय
धन

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के हैं। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं। आपके चेहरे पर एक तेज होता है। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते हैं। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप

महत्वाकांक्षी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ों की बातों पर अमल करते हैं। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यों में आपको दक्षता प्राप्त है। साथ ही आपने दृढ़ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यों को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्ठेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगी तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विदुषी के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगी। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीया होंगी। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगी परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपके रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकती हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगी। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगी। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगी। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगी। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगी तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही

बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगी।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़ी रहेंगी तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगी। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्न पूर्वक सुख साधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी परन्तु अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगी तथा अवसरानुकूल पहले अपनी ही इच्छा पूर्ण करेंगी। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके लिए रुचिशील रहेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा मित्र वर्ग भी गुणवान एवं शिक्षित रहेगा।

आप विभिन्न प्रकार के स्वादों के आस्वादन करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु नमकीन एवं मिष्ठान विशेष प्रिय रहेंगे तथा सामान्यतया स्वादिष्ट भोजन करना ही पसंद करेंगी। धन के प्रति आपके मन में पूर्ण लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन में तत्पर रहेंगी। साथ ही बहुमूल्य रत्न एवं आभूषणों से भी युक्त रहेंगी। आपकी वाणी में सामान्यतया ओजस्विता का भाव रहेगा लेकिन मधुरता में न्यूनता रहेगी। आप समय समय पर घर में धार्मिक कार्य कलापों या उत्सवों आदि का आयोजन करेंगी। साथ ही अन्यत्र आमंत्रित उत्सवों में भी अवश्य शामिल होंगी इसके अतिरिक्त नीति की आप ज्ञाता होंगी तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगी परंतु इनको अर्जित करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। अतः आपको बुद्धिमता का परिचय देना चाहिए तथा स्थितियों का सामना करना चाहिए।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की भी न्यूनाधिक मात्रा में प्राप्ति होगी तथा किसी वृद्ध व्यक्ति से भी चल या अचल सम्पत्ति मिल सकती है। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से भी आप न्यूनाधिक मात्रा में धन सम्पत्ति अर्जित करेंगी। लेकिन विवाद युक्त सम्पत्ति की आपको हमेशा उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपका आवास मध्यम ही होगा परंतु आधुनिक सुख सुविधाओं एवं आवश्यक भौतिक उपकरणों से युक्त होगा। साथ ही इसकी स्वच्छता बनाए रखने में आप व्यक्तिगत रूप से रुचिशील होंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा उनसे संबंधों में मधुरता कम ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यावस्था के बाद ही संतोषजनक होगा।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी सदस्यों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी जिससे उन्हें यथोचित सम्मान एवं आदर प्राप्त होगा। आपके प्रति भी उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगी तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी लेकिन परस्पर मतभेदों की बहुलता होगी जिससे यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तभी आप वांछित सफलताएँ अर्जित कर सकती है। स्नातक परीक्षा को पास करने में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा या अन्य शिक्षा ग्रहण करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही अच्छी सफलता मिल सकती है।

चतुर्थभाव में शनि के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आप रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः खान-पान का प्रारंभ से ही विशेष ध्यान रखना चाहिए एवं तनाव से भी मुक्त रहना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगी आपको उपरोक्त समस्याओं में कमी आएगी तथा समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा आपके कार्य कलाओं पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होती रहेंगी। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र की भी आप ज्ञाता होंगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शों से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगी तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगी तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगी। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलाओं से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा बुध भी स्वराशिस्थ सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्य कारक एवं विविध प्रकार के कार्यों में दक्ष होता है। बुध के प्रभाव से वह सुशील विद्वान बुद्धिमान कलाप्रिय एवं प्रसिद्धि व्यक्ति होता है एवं कर्तव्य परायणता की भावना से युक्त होता है।

अतः इसके शुभ प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने संभाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। स्वच्छता के प्रति वह विशेष सतर्क होंगे तथा उज्ज्वल परिधानों से सज्जित रहेंगे। उनके बुद्धिमत्ता पूर्ण एवं उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जन भी प्रभावित होंगे। बुध के प्रभाव से वह एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार एवं समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता बनी रहेगी जिससे व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही भौतिकता के प्रति भी उनके मन में आकर्षण रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला में वह विशेष रुचिशील होंगे तथा इन क्षेत्रों में वह कोई विशिष्ट सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। साथ ही सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में भी तत्पर होंगे।

सप्तम भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से आपका विवाह यथासमय सम्पन्न होगा। विवाह में मित्रों एवं संबंधियों का विशेष सहयोग रहेगा। लेकिन आप प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन पूर्ण सुखी होगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण का भाव रहेगा। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के सिद्धांतों एवं मूल्यों में समानता रहेगी फलतः आपसी सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

आपका विवाह किसी सम्पन्न परिवार से होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह में मायके से दहेज के रूप में आपको वांछित धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे जीवन में यथोचित सहयोग मिलता रहेगा। आप भी उन्हें उचित मान सम्मान प्रदान करेंगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में सलाह भी लेंगी।

आपके पति का सास ससुर के प्रति पूर्ण सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियां भी उसके सद्ब्यवहार से प्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण योजनाओं में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ होगी यदि किसी समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे आपको विशिष्ट उन्नति एवं लाभ प्राप्त होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही राहु भी दशमभाव में स्थित है। धनुराशि अग्नितत्व एवं राहु वायुतत्व है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगी तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। इसके अतिरिक्त आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय की भी इच्छुक होंगी जिसमें आपको सफलता की प्राप्ति होगी।

दशमभाव में धनुराशिस्थ राहु के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम विभाग, ऊनी उद्योग या फैक्टरी कर्मचारी, संदेश वाहक, दूत कार्य, बैंक कर्मचारी या वित्तीय क्षेत्र राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहें का व्यापार फैक्टरी या लोहें के उपकरणों का उत्पादन, पेट्रोल पम्प, एयर ट्रेवल एजेंसी राजनीति शुभ एवं अनुकूल रहेगी तथा इससे प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति करके उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा नवीन आयाम स्थापित करेंगी। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरम्भ करेंगी तो आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी एवं अनावश्यक समस्याओं का सामना भी नहीं करना पड़ेगा।

दशमभाव में राहु के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा एवं आदर मिलेगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से उच्चाधिकार प्राप्त पद भी अर्जित करेंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक, राजनीतिक संस्था या क्लब आदि की पदाधिकारी या सदस्या भी हो सकती हैं। लेकिन इसमें आपको विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। अतः लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे। समाज में भी उनका प्रभाव रहेगा एवं उनसे वे वांछित मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा एवं उच्च शिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य बनाएं। साथ ही कार्य क्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी स्वापरिश्रम एवं पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगी। परंतु आप लोगो के परस्पर संबंध मधुर कम ही होंगे तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक मतभेद बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से कम ही सम्पन्न करेंगे। अतः ऐसी परिस्थितियों की आप को उपेक्षा करनी चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि लग्न स्थान में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि पंचम सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

14 मई के बाद दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा है। उनको इच्छित लाभ प्राप्त हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उस समय आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण पैतृक संपत्ति, गढ़ा हुआ धन या ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

14 मई से चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे आपके परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता व पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय शुभ है। यदि वे विवाह योग्य हैं तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं है। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। 29 मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य अचानक प्रभावित हो सकता है। लग्न स्थान पर एक साथ राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप समय पर खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है, उस समय स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का निवारण होना शुरू होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी कुछ और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

14 मई के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादश स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा करते रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें एवं दुर्गा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं। जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले जातकों का पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। यदि आप शेयर बजार से जुड़े हैं तो आप को लाभ प्राप्त होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

द्वादश स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

02 जून के बाद एकादश पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा। उस समय छोटे मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। 31 अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो इसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा जिससे सभी लोगों के अंदर साहनुभूति की भावना बनी रहेगी। आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा परन्तु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके

बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। भाईयोंका सहयोग प्राप्त होगा। समाज में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 31 अक्टूबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

02 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा समय है। आपके बच्चे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। पहले बच्चे का विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए 02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे।

छेटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जूनबाद लम्बी यात्रा के भी योग बन रहे हैं। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 02 जूनके बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष एकादश भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य से अच्छा रहेगा। कार्य, व्यापार में सफलता तो मिलेगी परन्तु इसके लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगा। जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ सकता है। गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु आलस्य के कारण उसका भी लाभ नहीं ले पाएंगे।

जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। साझेदारी में व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलेगा, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धन लाभ होता रहेगा परन्तु लग्नस्थ शनि के प्रभाव से बीमारी में भी आप का पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों

को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाइयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए ये समय ज्यादा खराब है। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो जाएगा।

जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूल बनी रहेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

जून के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु पेट संबंधित रोग दे सकता है अतः उस समय अधिक तला व मसालेदार भोजन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया है। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं

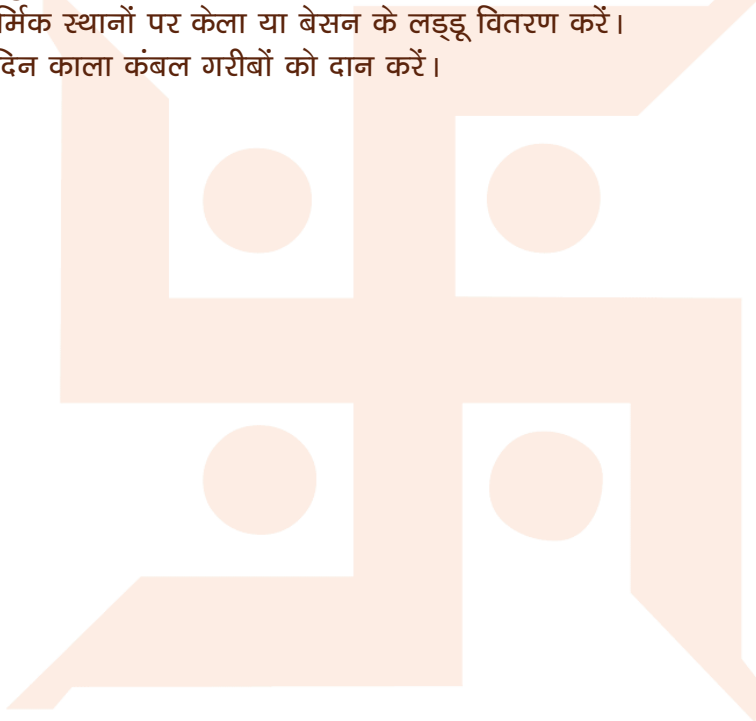
करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

26 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप व दान पुण्य आदि क्रियाओं के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको किसी पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह फिर से अनुकूल हो रहा है। किसी के साथ मिलकर कोई कार्य कर सकते हैं जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों में पत्नी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने सफल रहेंगे। एकादश के राहु अचानक धन लाभ करायेंगे। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिल सकते हैं। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार के सदस्यों पर भी आपका अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ परिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हाने की सम्भावना है। परिवार में विवाह आदि शुभ कार्य होने से खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की

अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

24 जुलाई के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है परन्तु फरवरी के बाद मौसामजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं। उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें। नहीं तो शरीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें। मानसिक रूप से दृढ़ रहें।

गुरु ग्रह का गोचर 24 जुलाई को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 28 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं भी होंगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आपकी अपने घर से दूर की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि आएगी एवं आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गि होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान के शनि कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपको इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने के कारण कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में कठिनाईयों के बावजूद भी विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। साझेदारी के लिए उपयुक्त समय है।

अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। बड़े अधिकारियों का भी सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। सन्तान या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

मार्च के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। 08 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

29 मार्च से आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल व परिश्रम से आगे बढ़ेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता बनी रहेगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान रहे सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरू हो जाएगी। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। मार्च के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

08 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। 25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आपकी जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की मदद करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी

धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को बेसन के लड्डू दान करें।

